सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए सूरत रोसन।
खास उमत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान।। १ ।।

आम सिपारा तीसवां में जहां आधा पूरा होता है, वहां मक्की सूरत में फजर के बारे में लिखा है। अपनी अंगनाओं के वास्ते मैं वर्णन करती हूं। इसके ज्ञान से मोमिन निःसन्देह होकर भ्रम मिटाएंगे।

सौगंद खाई बीच होनें फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम।। २ ।।

कुरान हदीस में ग्यारहवीं सदी के बीच फजर होने का बयान है, जिसको रसूल साहब ने कसम खाकर लिखा है, इसलिए खुदा के दोस्त मोमिनों का मन खुदा की बन्दगी में लगेगा। फजर की बन्दगी में मोमिनों तथा संसार के जीवों को निजानन्द सम्प्रदाय से अखण्ड सुख मिलेगा।

पेहेला रोज कौल हुरमत, सो हादी देखावे रोज कयामत।
जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिल्हज थें खुली नजर।। ३ ।।

पहले दिन दसवीं सदी में श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए, जिससे मोमिनों को ईमान मिला। दूसरे तन में आकर कयामत को जाहिर किया। बारहवीं सदी में फजर होगी। यह बात पहले से ही तारतम ज्ञान से बताई।

ए पेहेले दिन की कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात।
इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी विख्यात।। ४ ।।

दसवीं सदी को दिन की आखिरी रात कहा है (दसवीं रात)। दसवीं सदी में श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए। ग्यारहवीं सदी में ज्ञान का सवेरा हुआ। कुलजम सरूप की वाणी को श्री प्राणनाथजी महाराज ने मोमिनों में जाहिर किया।

दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी मस्कीनों को देखाई वस्त।
कह्या अरफेका अगला दिन, वास्ते अग्यारहीं ईद रोसन।। ५ ।।

दूसरे तन मलकी स्वरूप श्री श्यामाजी महारानी तीसरे हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी के तन से जाहिर हुए और कष्ट उठाकर मोमिनों को अखण्ड परमधाम की पहचान कराई। दसवीं सदी के आगे का दिन ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आने से बड़ी खुशी हुई।

पढ़ना द्वा वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का हुआ इत।
पाक होवे सबों का दम, तब जाहेर हुई ईद खसम।। ६ ।।

ग्यारहवीं सदी में मोमिन खुदा से विनती करेंगे, ऐसा लिखा है। उनकी सभी कामनाएं पूरी होंगी। जब वाणी से सभी के संशय मिटकर निर्मल हो जाएंगे, तब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज जाहिर होंगे और सभी को खुशी होगी।

पेहेला रोज कयामत बयान, सो हजार बरस की इसारत जान।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमी से दूजी अग्यारहीं मिली।। ७ ।।

पहले दिन में कयामत की हकीकत एक हजार वर्ष की बताई है। रसूल साहब से जब उनके यारों ने पूछा कि कयामत कब होगी, तो उन्होंने दो उंगली से इशारा किया, अर्थात् दो स्वरूप जब मिलेंगे, अर्थात् दसवीं के स्वरूप श्री श्यामाजी महारानी, ग्यारहवीं के स्वरूप श्री प्राणनाथजी मलकी और हकी सूरत मिलेंगी तब कयामत होगी।

Nijanand App

दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालें मिलाइयां बीच कही।
कलीम अल्ला रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमीमें ऊग्या दिनें।। ८ ।।

ग्यारहवीं सदी में मलकी और हकी स्वरूप मिले तो ज्ञान की रोशनी फैली। इसी ग्यारहवीं सदी में मोमिनों का मिलना कहा है। श्री श्यामाजी महारानी का तारतम ज्ञान जाहिर हुआ और ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आई।

रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्लासों मिल।। ९ ।।

सौ वर्ष की रात्रि में जगह-जगह पर वाणी उतरी। श्री देवचन्द्रजी तथा श्री श्यामाजी के दूसरे तन श्री प्राणनाथजी दोनों स्वरूपों ने मिलकर कुलजम सरूप की वाणी दी। फजर के समय रूह अल्लाह श्री श्यामाजी को बादल कहा। इलम के जाहिर होने को ही कुरान में फजर कहा है। श्री प्राणनाथजी महाराज हकी स्वरूप के अन्दर श्री श्यामाजी महारानी के मिलने से कुलजम सरूप की वाणी की बरसात हुई।

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द से परमधाम की वाणी जाहिर हुई। सब झूठ की पूजा करने वाले शर्मिंदे हुए। अपनी अज्ञानता पर रोकर पश्चाताप करेंगे। सारी दुनियां का यही हाल होगा।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४४३ ॥

साखी– **तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन।**
रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन।। १ ।।

कुरान के तीन दिन बड़े बताए हैं। बड़ी महिमा कही है। यह तीन दिनों में तीनों सूरतों की हकीकत बसरी, मलकी और हकी कही है। रसूल साहब कुरान लाए। रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी तारतम लाए। हकी सूरत कुलजम सरूप की वाणी लाए। इस तरह से रसूल साहब से कयामत तक की हकीकत लिखी है।

याद करो खुदाए के तांईं, तकबीर कहों दिन गिने हैं जांहीं।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक।। २ ।।

कहा है कि कुरान में कयामत के दिन जाहिर होने का लिखा है, इसलिए हरदम खुदा के स्वरूप को याद करो। इन तीनों दिनों की बड़ी महिमा कही है। इनके पीछे बारहवीं सदी में श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज खुद खुदा जाहिर हुए।

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई।
अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन।। ३ ।।

आजम नाम के इमाम ने अपनी किताब में लिखा है कि बारहवीं सदी में फजर की नमाज पढ़ी जाएगी। अरफा अर्थात् दसवीं सदी से लेकर बारहवीं सदी (फजर) तक के बीच रूह अल्लाह श्री श्यामाजी और इमाम मेंहेंदी दो साहेब हाजिर हुए।

Nijanand App